OM 15_Page 1 and 2 13-10-2014 17:01 Page 6

ओ.आर.सी.-गुड़गांव। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर पहुँचने पर वहाँ समर्पित भाई-बहनों को बोर्ड रूम में सम्बोधित करते हुए कहा कि अब समय है, बाबा की जो हमारे ऊपर आश है उसे पूर्ण करने का और स्वयं को सम्पन्न बनाने का। बाबा ने हमें ये सुंदर समय दिया है जहाँ हम अपने उज्जवल भविष्य की नींव रख रहे हैं। हमारा भविष्य कैसा होगा ये हमें यहाँ से ही तय करना है। उस वक्त ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. बृजमोहन तथा दादी रुक्मणि भी उपस्थित थे।

ढ़ाई आखर प्रेम के...

''पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय,
ढ़ाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।''

प्रेम मनुष्य के जीवन का एक शास्वत सत्य है जिसे वह कभी चाहकर भी नकार नहीं सकता। कहा जाता है प्रेम के ढ़ाई अक्षर होते हैं लेकिन शब्द अधूरा होते हुए भी प्रेम सदैव पूरा होता है। इस अधूरे शब्द को अपने जीवन में महसूस कर मनुष्य का जीवन पूर्ण हो जाता है। प्रेम के बिना ये असार संसार नीरस है। प्रेम मनुष्य में जीवन का संचार करता है। ये वो शक्ति है जो मनुष्य में मनुष्यता लाती है, एक आत्मा को दूसरी आत्मा से तथा आत्मा को परमात्मा से जोड़े रखती है। प्रेम एक ऐसी भावना है जिसके अभाव में व्यक्ति का जीवन नीरस हो जाता है।

कितनी ही किताबें-ग्रन्थ, शास्त्र व्यक्ति पढ़ ले परंतु यदि उसमें प्रेम की भावना नहीं तो उसे ज्ञानी-पंडित या श्रेष्ठ आत्मा नहीं कहा जा सकता। यदि वह प्रेम के ढ़ाई अक्षर पढ़ ले तो बड़े से बड़ा ज्ञानी भी उसके सम्मुख झुक जाता है। प्रेम एक अथाह सागर की भांति है जिसमें इसके सभी रूप समाये होते हैं। कभी यह माँ-बच्चे के प्रेम के रूप में पल्लवित होता है तो कहीं पति-पत्नी के प्रेम के समर्पण भाव में उजागर होता है। कभी यह भाई-बहन के प्यार को रक्षासूत्र में बांधता है तो कभी मित्रों के हृदय में अविरल धारा की भांति बहता है। भक्त और भगवान के बीच या आत्मा और परमात्मा के बीच भी प्रेम का ही संबंध होता है। प्रेम ही है जो परमात्मा को भी आत्मा के समीप खींच लाता है। वो प्रेम ही है जिसके कारण भगवान को भक्त के समक्ष आना पड़ता है। प्रेम वो शक्ति है जो पाषाण को भी पानी बना सकती है, रेगिस्तान में फूल खिला सकती है। कुछ समय पूर्व का इतिहास ही यदि हम देखें तो मीरा हो या राधा जिनको प्रेम दिवानी कहा जाता है, इनका प्रेम इतना असीम था कि वे स्वयं कृष्णमय हो गई थीं। उसके बाद भी हमें लैला-मजनू, सोनी-महिवाल, हीर-रांझा जैसे उदाहरण देखने को मिलते हैं जिन्होंने प्रेम में स्वयं को कुर्बान कर दिया। इन सभी का प्रेम नि:स्वार्थ एवं शुद्ध था। इनको एक-दूसरे से किसी प्रकार की कोई अपेक्षा नहीं थी। प्रेम तो एक एहसास है जो हमें एक-दूसरे से जोड़े रखता है। प्रेम खुदा की वो नेमत है जिसके समान दुनिया की कोई नेमत नहीं। प्रेम बिना कुछ कहे सब कुछ कह देता है। इसके लिए ही कहा गया है:

'होंठ सिले हैं मगर फिर भी बात होती है,
तुम वहाँ मैं यहाँ फिर भी मुलाकात होती है,
तेरे बिना ये ज़िन्दगी, ज़िन्दगी नहीं,
तू साथ है तो सारी कायनात साथ होती है।'

प्रेम परमात्मा द्वारा प्रदत्त एक ऐसा गुण है जिसके बिना जीवन संभव ही नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति का किसी न किसी से प्रेम अवश्य होता है, भले वो प्रेम स्वयं से ही क्यों न हो, किसी वस्तु से क्यों न हो पर होता अवश्य है। सत्य प्रेम सागर की तरह है, जिसके हृदय में सच्चा प्रेम है वहाँ कोई भी नकारात्मक विचार, गलत भावनाएं, झूठ, धोखा इत्यादि नहीं हो सकते। जहाँ इस प्रकार की भावनाएं अंश मात्र भी हैं वहाँ प्रेम में कुछ मिलावट अवश्य है।

''रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय
तोड़े से फिर ना जुटे, जुटे गांठ परि जाये।''

प्रेम ही है जो परमात्मा को भी आत्मा के समीप खींच लाता है। वो प्रेम ही है जिसके कारण भगवान को भक्त के समक्ष आना पड़ता है। प्रेम वो शक्ति है जो पाषाण को भी पानी बना सकती है, रेगिस्तान में फूल खिला सकती है। प्रेम परमात्मा द्वारा प्रदत्त एक ऐसा गुण है जिसके बिना जीवन संभव ही नहीं है।

प्रेम के धागे को जहाँ एक ओर कमज़ोर कहा जाता है वहीं दूसरी ओर वह बेहद शक्तिशाली भी होता है। यदि हम सभी संबंधों को पूर्ण विश्वास एवं इमानदारी से निभाते हैं, अपने हृदय में शुभ-भावनाएं रखते हैं तो यह धागा और मजबूत होता जाता है, पर यदि हमारे संबंधों में झूठ, बेइमानी, धोखा, स्वार्थ इत्यादि का समावेश हो जाता है तो ये धागा कमज़ोर होता-होता टूटने की कगार पर आ जाता है। एक बार यदि यह धागा टूट गया तो आप कितना भी इसको जोड़ने की कोशिश कर लें जुड़ना मुश्किल हो जाएगा और यदि जुड़ भी गया तो उसमें गांठ अवश्य पड़ जाएगी। संबंधों की वो पहले वाली मिठास हम चाहकर भी कभी वापिस नहीं ला पायेंगे। हमें सदैव यह प्रयास करना चाहिए कि ये धागा दिनों-दिन और मजबूत होता रहे और इस प्रेम के धागे को मजबूत करने के लिए हमें परमपिता परमात्मा से अपना संबंध जोड़ना चाहिए क्योंकि हम जानते हैं कि परमात्मा प्रेम का सागर है। हम जितना-जितना उससे स्वयं को जोड़ते जायेंगे तो प्रेम हमारा भी नैचुरल संस्कार बन जायेगा। हम स्वयं भी प्रेममय हो जायेंगे और हमारे अंदर से प्रेम की अविरल धारा बहती हुई समस्त विश्व के लोगों तक पहुँचेगी।

आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रेम का स्वरूप बदलकर सागर से तालाब जैसा हो गया है। प्रेम का दायरा इतना छोटा हो गया है कि लोग दूसरों के द्वारा अपनी इच्छाओं की पूर्ति, धोखा, आकर्षण, वासना को ही प्यार समझने लगे हैं। प्रेम एक आकर्षण मात्र रह गया है। प्रेम के इस रहे हुए तालाब स्वरूप में इस प्रकार की गंदगी आने से इसमें सड़न पैदा होने लगी है। आज प्रत्येक संबंध में चाहे वो माँ-बाप-बच्चों का संबंध हो, पति-पत्नी का संबंध हो, भाई-बहन का संबंध हो, मित्रों का संबंध हो सबमें कहीं न कहीं सूक्ष्म रूप में स्वार्थ भावना ने अपना घर बना लिया है। तो आज ऐसे समय में आवश्यक है कि हम अपना संबंध उस प्रेम के सागर से जोड़ें और स्वयं को नि:स्वार्थ प्रेम से भरपूर करके सभी को इस प्रेम की अनुभूति करायें तथा इस तालाब में हमारा प्रेम कमल पुष्प समान पल्लवित होता रहे और पूरे संसार में खुशबू फैलाता रहे। - **ब्र.कु. शोभिका,शांतिवन**

मेघालय। दुर्गा पूजा के अवसर पर आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी समझाते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।

रूरा। नवदुर्गा चैतन्य झाँकी का उद्घाटन करने के बाद समूह चित्र में एस.डी.एम. राजीव पांडे, ब्र.कु.प्रीति, ब्र.कु.नीलम तथा अन्य।

सूरत-अडाजन। चैतन्य देवियों की झाँकी व 7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए स्टैन्डिंग कमेटी के चेयरमैन निरम शाह, वार्ड प्रमुख दीप विजय सेन, ब्र.कु. दक्षा व अन्य।

ग्वालियर। वाइस चांसलर ए.के. सिंह को कृषि मेले में शाश्वत योगिक खेती के बारे में बताते हुए ब्र.कु. चेतना। साथ हैं अन्य।

गया-ए.पी. कॉलोनी। दुर्गा पूजा के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विधायक प्रेम कुमार, कमिश्नर खंडेलवाल जी, डॉ. आर. कुमार, सी.आर.पी.एफ. कमाण्डेंट धीरज कुमार व ब्र.कु. सुनीता।

बागलकोट। राष्ट्रीय कार्यक्रम 'स्वच्छता अभियान' में भाग लेते हुए जगदगुरु जयबसावा मृत्युंजय स्वामी जी, घनश्याम भांडगे,फिल्म प्रोड्यूसर,वैश्नवी क्रियेशन, ब्र.कु. पदमा तथा अन्य।